International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

विष्णु प्रभाकर की कहानियों में मध्य वर्ग की मानवीय संवेदना

डॉ. ममता सिंह[1], अनिल कुमार[2]

[1]प्रोफेसर हिंदी विभाग, आगरा कॉलेज, आगरा। , डॉ. भीमराव आंबेडकर वि.वि. आगरा।
[2]शोधार्थी हिंदी विभाग, आगरा कॉलेज, आगरा।, डॉ. भीमराव आंबेडकर वि.वि. आगरा।

कहानी हिंदी साहित्य की सर्वाधिक सशक्त विधा है जो अत्यन्त लोकप्रिय है। मनुष्य स्वभाव से जिज्ञासु प्रवृत्ति का व्यक्ति है और वह अपने विचारों को किसी ना किसी माध्यम से प्रकट करता रहता है। लिखकर, बोलकर या संकेतो के माध्यम से वह अपने विचारों को अपने दुःख को प्रकट करने के रास्तों का निर्माण स्वयं करता है। कहानी भावों की अभिव्यक्ति का सरल माध्यम है। जिसका प्रभाव व्यक्ति के मानस पटल से लेकर हृदय स्थल तक सुगमता से पहुँचता है।

प्रारंभ में कहानियों का निर्माण मनोरंजन के लिए किया जाता था। कालान्तर में कहानियाँ व्यक्ति और समाज के महत्वपूर्ण अनुभवों के प्रकटीकरण के साथ ही समाज सुधारक बनी हैं। आधुनिक समाज का यथार्थ अवलोकन कहानियों के माध्यम से समझा जा सकता है।

एक कहानीकार संवेदनशील हृदय से समाज में घटित घटनाओ को स्वयं अनुभूत कर अपनी कहानी के माध्यम से समाज तक पहुँचाता है। कहानी किसी बात को समाज के सामने रखने का सरल माध्यम है। कहानी पाठक में रोमांच पैदा करने के साथ-साथ उसके अन्तःकरण को झकझोर कर रख देती है।

कहानी में मानवीय संवेदना का बाहुल्य होने के कारण मानवीय संवेदना को स्पष्ट और प्रभावमयी अभिव्यक्ति मिलती है। संवेदना से ओत-प्रोत साहित्य विधा अधिक रोचक, सशक्त और प्रेरणामयी बन पाती है। कहानी के द्वारा प्राचीनता और नवीनता सामने दोनों समग्र रूप में हमारे सामने प्रस्तुत होती हैं। जिसमें हम अपने जीवन को देखकर आने वाले समय के लिए मार्ग निर्धारित करते हैं।

आधुनिक हिंदी साहित्य में विष्णु प्रभाकर जी का योगदान अपनी विशिष्टता और मौलिकता के कारण बहुत ही महत्वपूर्ण है। प्रत्येक रचनाकार रचना लिखने की प्रेरणा अपने साहित्य परिवेश से ही ग्रहण करता है। विष्णु प्रभाकर जी ने जो अनुभूति अपने परिवेश से प्राप्त की उसी अनुभूति को रोचक, सुगठित, सशक्त बनाकर अपनी रचनाओं में प्रेषित किया है। जिसके अंतर्गत हम लेखक की मानसिकता और संस्कारों को जान सकते हैं। इसलिए लेखक के कृतित्व को समझने से पहले उसके व्यक्तित्व को समझना बहुत ही आवश्यक है, क्योंकि व्यक्तित्व से ही कृतित्व की जड़े मजबूत होती हैं। **विलियम हेनरी हडसन अनुसार - " रचयिता के हृदय एवं बुद्धि से ही एक महत् ग्रंथ का जन्म होता है। रचनाकार अपने आपको रचना के पृष्ठों में समर्पित करता है। रचनाकार के जीवन की विशेषताएँ रचनाओं में समाविष्ट रहती हैं। उसमें रचनाकार का व्यक्तित्व झलकता है। " 1**

आधुनिक युग के परिवर्तित नवचेतना के रचनाकार विष्णु प्रभाकर जी का जन्म 21 जून 1921 को उत्तर-प्रदेश के पश्चिमी भाग में जिला मुजफ्फरनगर के एक छोटे से कस्बे मीरापुर में सूर्योदय के समय हुआ। यहीं उनके जीवन के बारह

वर्ष व्यतीत हुए । संयुक्त परिवार में रहते हुए । उनके बाबा, दादी, परदादी, चाचा तथा माता-पिता के संस्कारों ने प्रभाकर जी को प्रभावित किया । प्रभाकर जी की माता महादेवी जी ने प्रभाकर जी को सदैव कठिन परिश्रम करते हुए लक्ष्य प्राप्ति की प्रेरणा दी । पिता दुर्गाप्रसाद जी की धर्म-कर्म में रुचि थी । प्रभाकर जी अपनी माँ से अधिक प्रभावित रहे । उन्होंने ही प्रभाकर जी को सहिष्णुता तथा मानवीय चेतना का पाठ पढ़ाया जो उनके पूरे जीवन को प्रेरित करता रहा ।

हिंदी साहित्यकारों में 'विष्णु प्रभाकर' एक ऐसा यशस्वी नाम है जो आधी शताब्दी से भी अधिक समय तक साहित्य-साधना में लीन रहा । प्रेमचन्द के बाद हिंदी में जिन साहित्यकारों ने महत्वपूर्ण स्थान बनाया उनमें प्रभाकर जी का स्थान महत्वपूर्ण है । प्रभाकर जी ने सन् 1931 से 2007 की लम्बी अवधि में विविध गद्य-विधाओं में जिनमें नाटक, कहानी, लघुकथा, उपन्यास, जीवनी, आत्मकथा,रेखाचित्र, यात्रावृत, संस्मरण, बाल-साहित्य आदि शामिल हैं । प्रभाकर जी ने जितना लिखा है वह, किसी लेखक की रचनात्मक जिजीविषा का अद्‌भुत उदाहरण है ।

प्रभाकर जी को अपनी साहित्यिक उपलब्धियों के लिए अनेक बार राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया । पाब्लो नेरूदा सम्मान ('आवारा मसीहा' शरतचन्द्र की जीवनी के लिए, तुलसी पुरस्कार, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, सूर पुरस्कार, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार, बेनीपुरी पुरस्कार लघुकथा रत्न भारतीय ज्ञानपीठ का 'मुर्तिदेवी पुरस्कार' और हिंदी अकादमी दिल्ली का 'शलाका सम्मान' (सत्ता के आर-पार नाटक के लिए), साहित्य अकादमी पुरस्कार (अर्द्धनारीश्वर उपन्यास लिए) महात्मा गाँधी जीवन-दर्शन एवं साहित्य सम्मान, राहुल सांकृत्यायन यायावरी पुरस्कार (राष्ट्रपति द्वारा), पद्म पुरस्कार (राष्ट्रपति द्वारा), शब्द-शिल्पी की उपाधि साहित्यकार शिरोमणि साहित्य वाचस्पति डी.लिट की मानक उपाधि ।

विष्णु प्रभाकर जी की प्रसिद्धि का आधार उनकी सर्वाधिक चर्चित कृति 'आवारा मसीहा' है । आलोचकों का मानना है कि यदि प्रभाकर जी कोई अन्य कृति नहीं भी लिखते तो केवल 'आवारा मसीहा' लिखने के बाद भी उनका नाम साहित्य में अमर रहता ।

विष्णु प्रभाकर जी की अधिकांश कहानियाँ मध्यवर्ग की विसंगतियों, विडम्बनाओं, संघर्षो तथा द्वंद्वों को उकेरने वाली हैं । उनके साहित्य में उनके स्वयं के भोगे हुए जीवन-अनुभव हैं । यही कारण है कि उन्होंने अधिकांशत: मध्यवर्गीय समाज की कृत्रिमता उच्च तथा मिथ्या प्रदर्शन और खोखलेपन को अपनी कहानियों में उभारा है । उनकी कहानियों में मध्यवर्गीय पात्र सामाजिक संवेदना से परिपूर्ण हैं । अपने व्यापक दृष्टिकोण के चलते विष्णु जी ने अपने आस-पास के परिवेश के बहुविध पक्षों से पात्रों को चुनकर उन्हें वर्गत विशेषताओं, दुर्बलताओं एवं प्रवृतियों से परिपूर्ण करके यथार्थ रूप सें प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है ।

महानगरीय समाज में आज प्रत्येक व्यक्ति स्वार्थ के वशीभूत होकर एक-दूसरे के प्रति संवेदनाशून्य होकर एक झूठी तथा षड्यन्त्रों से भरी जिंदगी जीने के लिए एक दूसरे को नकारते, धकेलते तथा रौंदते हुए चले आ रहे हैं । इस महानगरीय तीव्र मूल्य-विघटन तथा संबंधहीनता से परिवारों में निरंतर तनाव उत्पन्न हो रहा है । की आधुनिक पीढ़ी ही अपने माता-पिता तथा परिवार के बुजुर्गों के प्रति औपचारिकता का नकाब पहने हुए हैं । एक दुर्लभ व्यक्ति की भूमिका में लेखक ने लिखा- **" अपना मध्यवर्गीय दुःख मैंने यहाँ अक्सर निम्नवर्गीय आइनों में देखना चाहा है । " 2**

उद्देश्य -

1. **वर्ग मध्य**
2. **मानवीय संवेदना**

व्याप्ति एवं प्रासंगिकता - प्रस्तुत शोध पत्र में विष्णु प्रभाकर कृत कहानियों के साथ-साथ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं का प्रयोग किया गया है।

अनुसंधान पद्धति - प्रस्तुत शोध पत्र में मानवीय संवेदना जैसे विषयों पक्षों का स्पष्टीकरण विभिन्न रचनात्मक कृतियों के उदाहरण दे कर समझाया गया है। इसमें तटस्थ रहकर मानवीय संवेदना के निकष पर कहानियों का मूल्यांकन कर विष्कर्षो तक पहुँचाया गया है।

मानवीय संवेदना आशय और स्वरूप - 'संवेदना' का अर्थ है - अनुभूति ज्ञात या विदित होना अर्थात शरीर में किसी प्रकार की वेदना का प्रकट होना।

" संवेदना शब्द में 'सं' उपसर्ग है। जो वेदना शब्द से मिलकर निर्मित होता है। 'सम्यक प्रकारेण वेदयतीति य: संवेदना'। अर्थात वेदना की सम्यक् प्रकार से अभिव्यक्ति का नाम ही संवेदना है।" 3

" संवदेना शब्द साहित्य और मनोविज्ञान दोनों विषयों में गृहित है और भिन्न अर्थो का घोतक है। मनोविज्ञान में संवेदना का अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द Sensation है और वहाँ इसका अर्थ ज्ञानेन्द्रियों का अनुभव है। गुजराती का 'संवेग' शब्द भी मनोविज्ञान से सम्बन्धित है। " 4

दर्शन के अनुसार - " संवेदना का मुख्य अर्थ है अनुभूति, ' ज्ञात ' या ' विदित होना ' अर्थात शरीर में किसी प्रकार का वेदन होना। प्रस्तुत गर्मी-सर्दी दुःख-सुख आदिका अनुभव करना या ज्ञात होना ही संवेदन या संवेदना " 5

मनोविज्ञान कोश के अनुसार - " संवेदना चेतना की वह अवस्था है जो किसी एक इन्द्रिय के उत्तेजित होने पर उत्पन्न होती है और जिसका तात्त्विक विश्लेषण नहीं किया जा सकता है। " 6

Encyclopedia Britannica में 'संवेदना' शब्द को कुछ इस प्रकार परिभाषित किया गया है - "SENSATION" is the conscious - experience that follows immediately upon the stimulation of sense organ or a sensary nerve. The word is also used as indicating the general class of all such experiences many psychologests and psychologists regard sensation as a concept defined in terms of dependent relationship between Characteristics of discreminatory of organism and properties of the physical stimulus. "

संवेदना का कोशगत अर्थ -

नालंदा विशाल शब्द सागर के अनुसार :- " मन में होने वाले शोध या अनुभव और किसी को कष्ट में देखकर मन में होने वाले दुःख सहानुभूति । " 8

मानवीय संवेदना को हम एक निश्चित सीमा के अन्दर कैद नहीं कर सकते । यह अत्यंत विस्तृत रूप लिए हुए है ।

मध्य वर्ग - विष्णु प्रभाकर जी की कहानियों में मध्य वर्ग की संवेदना संघर्षो तथा द्वंद्वों को उकेरने वाली हैं । प्रभाकर जी स्वयं के भोगें हुए जीवन-अनुभवो को कहानियों के माध्यम से समाज तक पहुँचाना चाहते हैं । मध्य वर्ग के खोखले पन, आड़म्बर और समाज के सामने नंगी प्रतिष्ठा का ढ़ोग उनके व्यक्तित्व में साफ दिखाई देता है ।

औद्योगिक और पूँजीवाद के साथ समाज में तीन वर्गो का विकास हुआ । एक पूँजीपति वर्ग और दूसरा श्रमिक वर्ग-इन दोनों के मध्य तीसरा वर्ग है मध्य वर्ग - **" मध्यम वर्ग की सत्ता मुख्यतः शोषक और शोषित के मध्य है । शोषक और शोषित दो विरोधी शक्तियाँ हैं जिनके मध्य सामाजिक व्यापार समाहित होता है । मध्यवर्ग की स्थिति वस्तुतः दो छोरों के बीच की वह वास्तविक स्थिति है, जिसकी प्रवृत्तियाँ इन दो छोरों की ओर मुड़ी प्रतीत होते हुए भी अपनी सामाजिक यथार्थता में अलग स्वतंत्र सत्ता रखती है । " 9**

मध्य वर्ग की मानवीय संवेदना अमरकांत के शब्दों में - **" अमरकांत ने मध्यवर्ग की यातना का उसकी विडम्बना का बेहतरी आशा और महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए उसकी व्यस्तता और दौड़-धूप और परिणाम में व्यर्थता और सामूहिक सदस्यता के उसके बढ़ते हुए विश्वास का सजीव चित्रण किया है । " 10**

मध्यवर्गीय समाज की एक बड़ी समस्या संयुक्त परिवार प्रणाली है । मध्यम वर्ग में सदस्यों की संख्या और कमाने वाला एक हो तो उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर होने के साथ परिवार की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करना भी कठिन हो जाता है । **' जीवन एक कहानी '** में विष्णु प्रभाकर जी मध्यवर्गीय परिवार में एक व्यक्ति की कुमाई से घर के खर्चों की पूर्ति न होने और अर्थ व्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभाव को प्रभाकर जी ने दिखाने का प्रयास किया है - **" पं. निशिकांत खैर मैंने वह पर्चा देखा तो खचे का जोड़ एक सौ छपन्न लगभग था और आमदनी वही डेढ़ सौ तितलियों की तरह रंग-बिरंगी कल्पनाएँ आ- आकर भाग गई, बजट बन-बनकर बिगड़ गए, उस समय मेरी हालत भारत सरकार के अर्थ-सदस्य से भी बुरी थी । वह बेचारा सरकारी बजट में बचत दिखाकर भी असेंबली के मेंबरों को जवाब देते- देते इस प्रकार कॉप उठता है, जिस प्रकार चमड़े का ढोल थाप पड़ने पर काँपता है, लेकिन मेरा क्या होगा ? मैं अपने विरोधी सदस्य 'मन' को क्या जवाब दूंगा ?**

न जाने क्यों बहुत देर तक मेरा मन नही बोला, जो हो मैं भी अपनी ओर से आप लाचार हो रहा हूं । भाग्य मोटा है, नहीं तो मेरे पड़ोसी तो मेरी ही उम्र के हैं अंग्रेजी का एक अक्षर ठीक से नहीं लिख सकते लेकिन हजार रुपये जेब में डालकर सरकारी कोठी में ऐश से रहते हैं । सरकारी पेशगी पर मोटर रखी हुई है और सरकारी खर्च पर ही सात समुंदर पार तक की, जब जी चाहा खबर ले आते हैं ।

मेरी आँखे बरसात के कवि की तरह बरस पड़ी और हारी हुई सरकार के रक्षा मंत्री की तरह मैंने एक लम्बी साँस लेकर कहा तकदीर । " 11

प्रभाकर जी ने **'द्वंद्व'** कहानी में एक ऐसी नारी की स्थिति का वर्णन किया है जो शादी के बाद एक पिंजरे मे कैद हो जाती है जो न तो अपनी मर्जी से आ सकती है और ही कहीं जा सकती है । सुजाता का जीवन भी कुछ इसी तरहां का है जो अपने पति की अनुमति के बिना कुछ नहीं कर पाने की वजह से स्वतन्त्र जीवन जीने के लिए छटपटाती है - **" सुजाता**

की आँखे भर आई। सारे चित्र उसके सामने इस तरह घूम गए, मानों वे सब सजीव घटनाएँ अभी उसके सामने घट रही हैं और वह उन्हें देख रही है - असमर्थ विवश पत्थर के बुत की तरह न हिल सकती है न बोल सकती है। केवल उसके दिल का दर्द आँखो में उमड़कर चारो ओर फैलता जा रहा है, जिसकी चमक देखकर स्वयं वह ही काँप उठती है लेकिन वह सोचती है, उस कंपन का मूल्य ही क्या, जो हाथों को आगे न बढ़ा सके, जो पैरों को चलने के लिए विवश न करें... वह रुक गई। उसका दर्द और भी गहरा हो उठा। उसने फुसफुसाकर कहा, मुझे चलने से कोई नहीं रोक सकता। नहीं मैं स्वतन्त्र हूँ। मैं चाहे जो कर सकती हूँ।" 12

मध्य वर्ग में दाम्पत्य संबंधों के बनते बिगड़ते रूपों के कई कारण हैं। **'माँ-बाप'** कहानी मे फातिमा और बशीर के बीच में उत्पन्न हुए विवाद को लेकर जब तलाक कि नौबत आती है तो फातिमा की माँ अपनी आर्थिक स्थिति ठीक न हो पाने की वजह से फातिमा माँ, फातिमा के बच्चे को बशीर को दे देती है - **" कहने लगा, तलाक तो दे दूँगा, पर बच्चा मैं लूँगा मुझे भी बुरा लगा था। फातिमा भी तभी से रोए जा रही है। माँ बच्चे को अपना खून पिला कर पालती है। और हमारे पास कौन पैसा जमा है। माँ के दिल को तो तू जानता ही है। कलेजे पर पत्थर रख लेना पड़ा " 13**

आर्थिक स्थिति कमजोर होने से अपने परिवार के भोजन से लेकर मूलभूत आवश्यकताओं तक की पूर्ति नहीं कर पाता। इस परिस्थिति में वह जीवन से मुक्त होने के लिए मुक्ति का मार्ग अर्थात मृत्यु का मार्ग चुनता है। प्रभाकर जी ने **'नई संस्कृति'** मैं यही दिखाने का प्रयास किया है - **" मैं जो कुछ करने जा रहा हूँ, वह क्षणिक आवेश का काम नहीं है। बहुत लम्बे अरसे से मैं उस पर सोचता रहा हूँ। मैं उसकी पूरी जिम्मेदारी अपने ऊपर लेता हूँ। विश्वास मानिए, मैं जानबूझकर अपनी बेटी और दोनों बेटों की हत्या करने जा रहा हूँ। प्रश्न उठ सकता है आखिर मैं ऐसा क्यों कर रहा हूँ ? क्योंकि मैं नहीं चाहता कि वे जैसे हैं ; वैसी अवस्था में जिएँ। मैं नहीं चाहता उनके कारण मेरा राष्ट्र दुर्बल कहलाए। वे जीवन भर दुखी रहे और मरघिल्ले पिल्लों की तरह मौत के आने तक चीं-चीं करते रहें ; मुझे और मेरी पत्नी को जन्म भर गालियाँ देते रहें ; जैसे मैं अपनी माँ को देता रहा हूँ। यह कभी बरदाश्त नहीं कर सकता।" 14**

आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण व्यक्ति कहीं संघर्ष करता है तो कहीं मृत्यु को जीवन मुक्ति का केन्द्र बना लेता है। **'नई संस्कृति'** कहानी इन दोनों परिस्थितियों से भली-भाँति रूबरू कराती है। कहानी का नायक आर्थिक समस्या से घिरा हुआ है। परिवार के पालन पोषण में असमर्थ होने पर कभी जीवन से मुक्त होने के लिए मृत्यु को चुनता है तो कभी जीवन संघर्ष के लिए तत्पर रहता है - **" क्षण भर के लिए उसकी भयंकरता ने मुझे जड़ी भूत सा बना दिया। साथ ही मुझे खुशी कि मैंने अपने बच्चों की हत्या नहीं की नहीं, नहीं, यह गलत है। बेसक मैंने उन्हें**

जहर नहीं दिया, पर मैं उनकी हत्या

निरंतर कर रहा हूँ। ये रोग और दुर्बलता के चक्रव्यूह में फँसकर तिल-तिलकर दम तोड़ रहे हैं और उन्हें बचाने में असमर्थ मैं निरर्थक स्वप्न देख रहा हूँ। यह मोह नहीं तो क्या है ? कायरता और किसे कहते है ? नहीं, नहीं मैं स्वप्न नहीं

देखूँगा, मैं संघर्ष करूँगा, मैं संघर्ष करूंगा। मैं जीवन के अंतिम क्षण तक जीता रहूँगा। " 15

भ्रष्ट शासन तन्त्र मे आज मध्यमवर्ग पिस रहा है। उच्च पदो पर बैठे अधिकारी मध्यमवर्ग के व्यक्तियों के द्वारा गलत कार्य कराते हैं ताकि अधिकारियों की जेब भर सके और मध्यम वर्गीय व्यक्ति का भी खर्चा चलता रहे। इसी लालच में आकर व्यक्ति गलत कार्य करता है और अपने परिवार का पालन पोषण, करता है। अगर वह ऐसा नहीं करेगा तो उसके पापी पेट की भूख कैसे शांत होगी - **" मैं रिक्शावाला। मैंने आज दो सौ रुपये निकाले थे। तुम्हारे भाई की जेब से।**

हवलदार सहित चार व्यक्तियों में बँटे थे। मुझे मिले सौ। तीन को देकर सौ। मैंने भी मन का यह सौदा अपने लिए नहीं किया मैं भी नहीं जानता कि कितने दिन बाद पेट भर खाया मेरे परिवार ने कितने दिन बाद माँ को दवा मिली घरवाली को धोती मिली। कोठरी का हिस्सा, महाजन का सूद, सच कहूँगा मेरा गला भी तर हुआ आज। नहीं तो दिन भर खाट पर भूखे पेट सोना पड़ता है था...। " 16

निष्कर्ष - रूप में हम कह सकते हैं कि विष्णु प्रभाकर जी ने अपनी कहानियों में मध्य वर्ग की मानवीय संवेदना को गतिशीलता प्रदान की है। उनमें मानव विशेष रूप से महानगरीय मध्यवर्गीय मानव की सूक्ष्म से सूक्ष्म संवेदना को अभिव्यक्ति प्रदान करता है। एक संवेदनशील साहित्यकार होने के कारण विष्णु प्रभाकर जी ने मध्यवर्गीय समाज के संस्कारों, रूढ़ियों, मान्यताओं, परम्पराओं, समस्याओं तथा आधुनिकता के कारण हुए परिवर्तनों आदि सभी रूपों का चित्रण यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है।

संदर्भ सूची :-

1. A great boos is born of the brain and heart of its author, the has but himself into its pages, they par take of his life, and are instinct with his individuality - William Henary Hudson: An introduction to the study of Literature: Page No.15: 9th Edition
2. एक दुर्लभ व्यक्ति, मनोहर श्यामजोशी की भूमिका
3. मधुमती संपादक डॉ. अजित गुप्ता, अंक-नवम्बर 2008 में प्रकाशित लेख 'संवेदना और सृजन' लेखक शिव मृदुल, पृ.- 10
4. हिंदी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना, डॉ.उषा यादव, पृ.11
5. शब्दार्थ दर्शन, पृ.-600
6. The state of awareness which results when a sense organ stimulated and which cannot be analyzed into Clements.
   i. [The new Dictionary of psychology: Philip
   ii. Lawrence Harrinance, Page-303]
7. Encyclopedia. Vol.20, Page 328.
8. नालंदा विशाल शब्द सागर, श्री नवलजी, पृ.-1385
9. हिंदी उपन्यास का विकास और मध्यवर्गीय चेतना, वीना श्रीवास्तव, पृ.-15-16
10. सुनील जोशी, हिन्दुस्तान (पत्रिका) अक्टूबर दिसम्बर 2014, इलाहाबाद, हिन्दुस्तान एकेडमी, पृ. – 73
11. विष्णु प्रभाकर, सम्पूर्ण कहानियाँ, पहला खण्ड, मुरब्बी जीवन एक कहानी, पृ. – 187
12. विष्णु प्रभाकर, सम्पूर्ण कहानियाँ, दूसरा खण्ड, आश्रिता, द्वंद्व, पृ. - 248
13. विष्णु प्रभाकर, सम्पूर्ण कहानियाँ, चौथा खण्ड,मेरा वतन माँ-बाप, पृ. 20
14. विष्णु प्रभाकर, सम्पूर्ण कहानियाँ, चौथा खण्ड, मेरा वतन, नई संस्कृति, पृ. 250-251

15. वही, पृ० – 253

16. विष्णु प्रभाकर, सम्पूर्ण कहानियाँ, आठवा खण्ड, जिंदगी एक रिहर्सल, कितने जेब कतरे, पृ.- 75